अन्तकाले च मामेव स्मरन् मुक्त्वा कलेवरम्।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः।।

'जो कोई भी अन्तकाल में मेरा स्मरण करता हुआ देह-त्याग करता है, वह तत्काल मेरी परा प्रकृति (मेरे स्वभाव) को प्राप्त करता है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।'

जो मृत्यु-काल में श्रीकृष्ण का चिन्तन करता है, वह श्रीकृष्ण को ही प्राप्त होता है। अतएव श्रीकृष्ण के रूप-माधुर्य का नित्य स्मरण करता रहे। यदि इस रूप का चिन्तन करते हुए मृत्यु हुई तो वह भगवद्धाम में प्रविष्ट हो जायगा। **मद्भावम्** शब्द से श्रीभगवान् की परा प्रकृति इंगित है। श्रीभगवान् सच्चिदानन्द विग्रह हैं। हमारी वर्तमान देह सच्चिदानन्द नहीं है। वह 'असत्' है, 'सत्' नहीं। नित्य न होकर नाशवान है—'चित्' अर्थात् ज्ञानमय नहीं, वरन् अज्ञान से आवृत है। हमें वैकुण्ठ-जगत् का लेशमात्र ज्ञान नहीं है। वास्तव में तो हमें प्राकृत-जगत् का भी पूर्ण ज्ञान नहीं है, यहाँ के कितने ही पदार्थ हमें अज्ञात हैं। देह 'निरानन्द' है, आनन्दमय होने के स्थान पर सर्वथा दुःखमय है। संसार में जितने भी दुःखों की हमें प्राप्ति होती है, वे सब के सब देहजनित हैं। परन्तु जो मनुष्य भगवान् श्रीकृष्ण का चिन्तन-स्मरण करता हुआ इस देह को त्यागता है, वह तत्क्षण सच्चिदानन्द देह को प्राप्त कर लेता है। इसके प्रमाणस्वरूप आठवें अध्याय के पाँचवें श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण वचन देते हैं, 'वह मुझ को ही प्राप्त होता है।'

इस देह को त्याग कर प्राकृत-जगत् में कोई अन्य देह धारण करने का भी एक नियत क्रम है। मनुष्य की मृत्यु तभी होती है, जब यह निर्णय हो जाता है कि अगले जन्म में उसे किस योनि की प्राप्ति होनी है। यह निर्णय उच्च अधिकारी करते हैं, जीवात्मा स्वयं नहीं। इस जीवन में किए कर्मों के अनुसार ही जीव पुनर्जन्म में उत्थान अथवा पतन को प्राप्त होता है। इस दृष्टि से यह जीवन भावी जीवन की तैयारी है। अतः यदि इस जीवन में भगवद्धाम-गमन के योग्य बन जायें, तो प्राकृत देह का अन्त होने पर हमें भगवान् श्रीकृष्ण के समान अप्राकृत वपु की प्राप्ति हो जायगी।

पूर्व वर्णन के अनुसार योगियों की ब्रह्मवादी, परमात्मावादी, भक्त आदि अनेक कोटियाँ हैं और ब्रह्मज्योति में असंख्य वैकुण्ठ धाम हैं। इन चिन्मय लोकों की संख्या प्राकृत-जगत् के सब लोकों की गणना से कहीं अधिक है। यह प्राकृत-जगत् सृष्टि की एकपादविभूति मात्र है। सृष्टि के इस प्राकृत अंश में खरबों लोक, सूर्य, नक्षत्र और चन्द्रमा वाले अरबों ब्रह्माण्ड हैं। इस पर भी यह प्राकृत सृष्टि पूर्ण सृष्टि का अति लघु अंश ही है। अधिकांश सृष्टि माया से परे परव्योम में है। जो परमब्रह्म से सायुज्य का अभिलाषी है, वह अविलम्ब भगवान् की ब्रह्मज्योति को प्राप्त कर परव्योम में स्थित हो जाता है। दूसरी ओर भक्त, जो कि श्रीभगवान् के सांनिध्य का आस्वादन करना चाहता है, असंख्य वैकुण्ठ लोकों में से किसी एक में प्रवेश करता है। श्रीभगवान् अपने चतुर्भुज नारायण अंश से गोविन्द, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न आदि रूप धारण कर इन